प्रकाशन तिथि : 15 जून, 2021
प्रेषण तिथि : 19 जून, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 07 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

संघ के गुजरात क्षेत्र की मेजबानी में प्रताप जयंती

भारतीय तिथि अनुसार ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया महाराणा प्रताप की जन्मतिथि है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का केन्द्रीय कार्यक्रम वर्चुअल माध्यम से संघ के गुजरात क्षेत्र की मेजबानी में माननीय संघप्रमुख श्री के सानिध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में आर्यसमाजी संत स्वामी धर्मबंधु जी, राज्यसभा सांसद शक्ति सिंह गोहिल, गुजरात के शिक्षा मंत्री भूपेंद्र सिंह चुड़ासमा व वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह जी धोलेरा वक्ता के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती वर्ष में मुख्य समारोह से पूर्व 75 बड़े कार्यक्रम देशभर के विभिन्न शहरों में आयोजित करने का निर्णय किया गया। किन्तु विश्वव्यापी कोरोना महामारी के कारण भौतिक रूप से जब कार्यक्रम करना संभव नहीं हुआ तो वे 75 कार्यक्रम वर्चुअल माध्यम से आयोजित किए जा रहे हैं। उसी कड़ी में आज महाराणा प्रताप की जयंती भारतीय पंचांग के अनुसार मनाई जा रही है। महाराणा प्रताप एक ऐसा व्यक्तित्व है जिनका परिचय हम सभी जानते हैं। उदय सिंह जी के स्वर्गवास के पश्चात गोगुंदा में उनका राज्याभिषेक हुआ। अनेकों प्रकार की परिस्थितियां उनके सामने आई और उन्होंने सबका सामना क्षत्रियोचित वीरता से किया। अनेक देशों को स्वतंत्र होने के लिए संघर्ष की प्रेरणा स्वतंत्रता के पुजारी महाराणा प्रताप से मिली थी। वहां के लोग उन्हें आज भी याद करते हैं। जब भारत से कोई विदेश में जाता है तो वहां के लोग उससे महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व के बारे में जानना चाहते हैं लेकिन आज हमारे ही देश में महाराणा प्रताप का इतिहास नहीं पढ़ाया जा रहा तो यहां से बाहर जाने वाला व्यक्ति उन्हें क्या बताएगा? ऐसा व्यक्तित्व जिसके बारे में लोग जानना चाहते हैं, जानकर उनसे प्रेरणा लेना चाहते हैं उन महाराणा प्रताप की हम आज जयंती मना रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान उनके व्यक्तित्व और उनकी महानता के बारे में हमने जाना। देश, धर्म और समाज के लिए उन्होंने क्या किया यह भी हमने पहले भी सुना है, आज पुनः सुना। कुछ लोगों द्वारा महाराणा प्रताप को सिरफिरा बताया जाकर अकबर को महान बताया गया है उन्हें शायद जानकारी नहीं है कि अकबर इस देश का निवासी भी नहीं था, ना ही इस देश का हितैषी था।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

द्रोहियों के प्रति व्यवहार में पृथ्वीराज आदर्श- बैण्यांकाबास

समाज जागरण में इतिहास की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि वह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण शिक्षक का कार्य करता है। श्रद्धेय आयुवान सिंह जी ने अपनी पुस्तक 'मेरी साधना' में लिखा है कि इतिहास हमारी साधना के पौधे के लिए खाद का कार्य करता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना एक संगठित शक्ति का निर्माण कर के क्षात्र धर्म का पालन करने की है और इसी दृष्टिकोण से संघ इतिहास का लेखा-जोखा और अंतरावलोकन करता है। संघ मानता है कि इतिहास केवल आत्मश्लाघा अथवा आलोचना के लिए ही नहीं है बल्कि इतिहास के श्रेष्ठ कृत्यों का हमें अनुकरण करना है और जो भूले हुई हैं उन्हें दोहराने से बचना है। 7 जून को श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा वर्चुअल माध्यम से मनाए गए सम्राट पृथ्वीराज जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि पृथ्वीराज चौहान के जीवन से हमें अनेक बातें सीखने की आवश्यकता हैं। पृथ्वीराज चौहान द्वारा मोहम्मद गौरी को क्षमा करना निश्चित रूप से उनका व्यक्तिगत गुण था किंतु सामाजिक दृष्टिकोण से वह गुण भी अवगुण बन जाता है क्योंकि गौरी केवल पृथ्वीराज का नहीं बल्कि पूरे समाज का, देश का शत्रु था। किंतु तराइन के अंतिम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान ने एक अनूठे आदर्श की भी स्थापना की जो हम सभी के लिए प्रेरणादायक और अनुकरणीय है। पृथ्वीराज जी के श्रेष्ठ सेनानायकों में से एक चामुंडराय किसी कारणवश उनसे नाराज हो गए और युद्ध न करने का निश्चय कर लिया। दूसरी ओर उनका एक अन्य सामंत हैहुलराय गौरी के साथ मिल गया। ऐसे समय में पृथ्वीराज देश की रक्षा के लिए चामुंडराय के पास स्वयं गए और उनसे युद्ध करने का निवेदन किया। इस पर चामुंडराय ने कहा कि आप स्वयं आए हैं तो मैं युद्ध में भाग तो लूंगा किंतु केवल एक तीर चलाऊंगा। तब पृथ्वीराज ने कहा कि यदि एक ही बाण चलाना है तो उसका प्रयोग हैहुलराय पर करके उसे समाप्त करो। पूज्य तनसिंह जी ने उनके इस आदर्श को अपने लेख 'तुम हैहुलराय को मैं मारो गौरी को' में लिखते हुए बताया है कि रावण की परंपरा तो स्वाभाविक हैं किंतु विभीषण की परंपरा बंद होनी चाहिए। हैहुलराय पृथ्वीराज का सामंत होने के बावजूद युद्ध के समय शत्रु से मिल गया। देशद्रोह की यह परंपरा सदैव के लिए समाप्त हो जाये इसलिए दुश्मन को मारने की अपेक्षा घर के भेदी को मारने का आदेश पृथ्वीराज ने दिया, क्योंकि घर का भेदी ही शत्रु का वास्तविक बल होता है। इस पूरे घटनाक्रम में यदि हम देखें तो चामुंडराय का जो व्यक्तित्व हैं वह स्वाभिमान के आवरण में छुपे अहंकार का प्रतीक हैं। इसी अहंकार के कारण जब राष्ट्र को उनकी आवश्यकता थी तब भी वे अपना सर्वस्व अर्पण नहीं कर पाए और केवल एक बाण चलाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान ली। आज हमारे आसपास ऐसे कितने चामुंडराय हैं जो केवल अपने अहंकार के वश होकर समाज और राष्ट्र की भयंकर हानि कर रहे हैं, यह हम देख सकते हैं। संघ इसी अहंकार को सामाजिक महत्वाकांक्षा में बदलने का मार्ग है। इस घटनाक्रम के दूसरे पात्र हैहुलराय को हम देखें तो उसने पृथ्वीराज का सामंत और पंजाब का सूबेदार होते हुए भी तराइन के द्वितीय युद्ध में द्रोह किया और अपने स्वार्थ के कारण गौरी के साथ मिल गया। ऐसे अनेक उदाहरण हम आज भी अपने आसपास देख सकते हैं जब अपने स्वार्थ के कारण कोई व्यक्ति समाज का शत्रु बन जाता है। तीसरे पात्र पृथ्वीराज चौहान हैं जिन्होंने गौरी की तुलना में हैहुलराय को मारना महत्वपूर्ण माना क्योंकि उन्होंने समाज में द्रोहियों की परंपरा को समाप्त करना अत्यंत आवश्यक समझा। हम विचार करें कि क्या आज हम अपने समाज में हैहुलराय जैसे द्रोहियों की पहचान कर पा रहे हैं? क्या हम उनका बहिष्कार करने का साहस कर पाते हैं?

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संघ के गुजरात क्षेत्र की मेजबानी में प्रताप जयंती

(पृष्ठ एक से लगातार)

वह एक विदेशी अतिक्रमणकारी था। अकबर के चरित्र और महाराणा प्रताप के चरित्र की कोई तुलना नहीं हो सकती। अकबर के हरम में 500 बेगमें थी। उसने स्त्री को केवल आमोद-प्रमोद का साधन माना, वहां नारी सम्मान की कोई बात नहीं थी। जबकि महाराणा प्रताप के बारे में हम जानते हैं कि नारी सम्मान अक्षुण्ण रखने के लिए उन्होंने अपने पुत्र को शत्रुओं के बीच भेज दिया था। अकबर अत्यंत क्रोधी व्यक्ति भी था। किसी की गलती होने पर भरे दरबार में वह उसका सिर काट देता था। ऐसी क्रूरता का भारतीय संस्कृति में कोई स्थान नहीं है। भारतवर्ष की संस्कृति श्रेष्ठ संस्कृति है। महाराणा प्रताप के चरित्र की महानता तो दुनिया भर में प्रसिद्ध है लेकिन हम आज प्रताप के बारे में जो स्मरण कर रहे हैं, उनकी विशेषताओं का गुणगान कर रहे हैं वह तभी सार्थक हैं जब हम यह विचार करें कि ऐसी क्या बात थी जिसके कारण हम उनकी जयंती मनाने को एकत्रित होते हैं। उन बातों को हम भी सीखें। सीखने के बाद आचरण भी आवश्यक हैं और आचरण नितांत व्यक्तिगत विषय हैं। हर व्यक्ति अपने ही ढंग से सोचता है कि मैं किस प्रकार का आचरण अपनी क्षमता अनुसार कर सकता हूं। हमको प्रताप की जयंती मनाने के साथ-साथ प्रताप बनने का भी प्रयत्न करना चाहिए। हम प्रताप के गुणों को अपने जीवन में कैसे उतार सकते हैं उसका अभ्यास करना चाहिए। जो दुर्गुण हमारे भीतर आ गए हैं उन दुगुर्णों को हम दूर कैसे कर सकते हैं इसका अभ्यास भी करना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे सांस्कृतिक और राष्ट्रीय मूल्यों को ध्यान में रखकर कार्य करता है। संघ की स्थापना आजादी से पूर्व ही हो गई थी। देश तो आजाद हो जाएगा लेकिन इस पर शासन करने वाले कैसे लोग होंगे? जो हजारों वर्षों से गुलाम रहे हैं वे उस गुलामी की बेड़ियां तोड़ने के लिए प्रयत्नशील तो हैं लेकिन फिर इस स्वतंत्र राष्ट्र का भार किसके कंधों पर आएगा और वह इसे कैसे संभालेंगे? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर में श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना हुई थी। संघ अपने शिविर और शाखा के माध्यम से युवाओं को सद्गुणों को धारण करने के लिए और दुगुर्णों का निवारण करने के लिए नियमित अभ्यास करवाता है। 1994 के पश्चात बालिकाओं में भी श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य प्रारंभ हुआ क्योंकि बालक एवं बालिकाओं दोनों ही संस्कारित होंगे तभी पूरा समाज संस्कारित हो सकेगा। जो आज बालिका है वह कल की माता होगी और एक संस्कारित माता ही संस्कारित संतान का निर्माण कर सकती हैं। जब तक हमारे जीवन व्यवहार में महापुरुषों के गुण नहीं उतरते तब तक उनकी जयंतिया मनाना औपचारिकता से आगे नहीं बढ़ पाएगा, इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ जयंती मनाने और महापुरुषों को याद करने के साथ-साथ उनके गुणों को जीवन में उतारने का व्यावहारिक शिक्षण भी प्रदान करता है।

स्वामी धर्मबंधु जी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि स्कॉटलैंड के एक विद्वान ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि किसी देश, जाति और समुदाय को मिटाने के लिए शस्त्र शक्ति की आवश्यकता नहीं होती बल्कि उसके इतिहास, संस्कृति, विचारधारा और भाषा को बदल दें तो वे स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। इतिहास कितना महत्त्वपूर्ण है यह इसी से सिद्ध होता है कि दुनिया भर में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में 60 प्रतिशत पुस्तके इतिहास से संबंधित होती हैं। विंस्टन चर्चिल ने भी कहा था कि शासन करने के सभी रहस्य इतिहास में छुपे होते हैं। इसीलिए इतिहास के महत्व को समझते हुए महाराणा प्रताप की जयंती हम भी आज मना रहे हैं। महाराणा प्रताप के सामने दो मार्ग थे- एक सत्ता और संपत्ति का और दूसरा स्वाभिमान के लिए संघर्ष का। उन्होंने संघर्ष का मार्ग चुना इसीलिए आज 450 वर्षों के बाद भी वह हमारे लिए आदरणीय और प्रेरणास्त्रोत बने हुए हैं। महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व को हम देखें तो उनमें पहली और सर्वप्रथम विशेषता थी नेतृत्व की क्षमता की। एक अच्छे नेतृत्वकर्ता के पास 'कम्युनिकेशन स्किल' का होना आवश्यक है। कम्युनिकेशन का अर्थ केवल सूचना देना भर नहीं है बल्कि इसका अर्थ है साझा करना। संवाद और साझेदारी के इस कौशल का आधार ईमानदारी है। जिसके व्यक्तित्व में जितनी ईमानदारी है उसकी बात का असर उतना ही अधिक होता है। महाराणा प्रताप की वाणी में वह असर था कि उनके 30 वर्षों के लंबे संघर्ष के दौरान भी उनकी प्रजा समस्त समस्याओं को सहन करते हुए भी तन मन धन से उनके साथ खड़ी रही। यह उनके व्यक्तित्व की ईमानदारी और आचरण की उच्चता का ही प्रभाव था। नेतृत्वकर्ता की दूसरी मुख्य विशेषता है कि उसे एक अच्छा श्रोता भी होना चाहिए। वह सब की बात को सुन सके, समझ सके और उसके बाद अपना निर्णय ले, वही सबको साथ लेकर चल सकता है। यह विशेषता भी प्रताप के व्यक्तित्व में थी और इसी कारण उनके सेनानायक और सहयोगी सदैव उनके साथ बने रहे। श्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता को किसी भी तरह के पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए, ना ही अपने पूर्वाग्रह के आधार पर किसी प्रकार का निर्णय उसे लेना चाहिए। यदि महाराणा प्रताप पूर्वाग्रह रखते तो वह कभी भी एक पठान हाकिम खान सूरी को अपना सेनापति नहीं बनाते। इसी प्रकार कुशल नेतृत्वकर्ता कभी भी मतान्ध नहीं होता है। सच्चा नेता कभी भी समाज को अच्छे और बुरे के आधार पर विभाजित नहीं करता है अन्यथा उसकी समस्त ऊर्जा व्यर्थ संघर्ष में ही खर्च हो जाती है। महाराणा प्रताप की सेना को यदि हम देखें तो उनकी सेना में सभी वर्गों के लोग उनके साथ थे, अर्थात उन्होंने समाज में किसी भी प्रकार का विभाजन पैदा नहीं किया और सब को अपने साथ लिया। नेतृत्वकर्ता को व्यक्तिगत मान-अपमान से ऊपर उठा होना चाहिए अन्यथा उसका अहंकार उसे नष्ट कर देता है। महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व को हम देखते हैं तो पाते हैं कि वे स्वाभिमानी हैं किंतु अहंकारी नहीं। उन्होंने अपनी मातृभूमि के स्वाभिमान को ही अपना स्वाभिमान समझा और अपने व्यक्तिगत मान-अपमान अथवा अहंकार को कभी अपनी देशभक्ति पर हावी नहीं होने दिया। इस प्रकार हम देखें तो महाराणा प्रताप एक महान नेतृत्वकर्ता की सभी कसौटियों पर खरा उतरते हैं। हम आज उनकी जन्म जयंती पर उनसे इन गुणों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा लें, यही उनकी जयंती मनाने की सार्थकता होगी।

वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने महाराणा प्रताप के संबंध में इतिहास में प्रचलित अनेक भ्रांतियों का निवारण करते हुए बताया कि महाराणा प्रताप के बारे में जो घास की रोटी खाने की बात कही जाती है वह ऐतिहासिक रूप से सत्य नहीं है। क्योंकि उनके जीवन में कभी भी ऐसी विपन्नता नहीं आई कि उन्हें सामान्य जीवन-प्रबंध संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़े। इसी प्रकार अकबर को शरणागति के संबंध में पत्र लिखने की बात भी बिल्कुल झूठ और अप्रमाणिक है। मुसलमान इतिहासकारों द्वारा लिखे गए इतिहास में भी इस पत्र का कहीं कोई विवरण नहीं आता है। इसी प्रकार भामाशाह द्वारा महाराणा प्रताप को अपनी संपत्ति दान करने की बात भी मिथ्या है क्योंकि वह कोई व्यापारी नहीं अपितु महाराणा प्रताप के सेनानायक ही थे और महाराणा प्रताप ने उन्हें राज्य-कोष की देखरेख का जिम्मा दिया था। मुगलों के जो खजाने महाराणा प्रताप द्वारा लूटे गए थे, वही धन भामाशाह की देखरेख में था। महाराणा प्रताप और अकबर के युद्ध को हिंदू-मुस्लिम युद्ध के रूप में प्रचारित करना भी एक गलत दृष्टिकोण है क्योंकि महाराणा प्रताप का अकबर के विरुद्ध संघर्ष हिंदू मुस्लिम संघर्ष ना होकर एक विदेशी आतताई के विरुद्ध अपनी स्वतंत्रता और मातृभूमि के गौरव के लिए किया गया संघर्ष था। इसी प्रकार महाराणा प्रताप को कठोर स्वभाव वाला भी बताया जाता है जो कि बिल्कुल गलत है। हल्दीघाटी के युद्ध में प्रताप की पराजय की जो बात कही जाती है वह भी तथ्यात्मक रूप से सही नहीं है क्योंकि अकबर का महाराणा प्रताप को मारने अथवा पकड़ने का उद्देश्य था जो सफल नहीं हो सका, इसलिए यह वास्तव में उसकी पराजय थी। गुजरात से राज्यसभा सांसद शक्ति सिंह गोहिल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि इतिहास सिर्फ जीत का नहीं लिखा जाता है बल्कि शौर्य का, सिद्धांतों का और महान कार्यों का लिखा जाता है। महाराणा प्रताप का संघर्ष सिद्धांतों पर आधारित था इसीलिए सदियों बाद भी उन्हें याद किया जा रहा है। ऐसे ही महान व्यक्तित्व जन समुदाय के लिए अनुकरणीय और प्रेरणास्त्रोत बनते हैं। संसार में बाहुबल वाले अनेकों लोग हुए हैं लेकिन जिस प्रकार से राजपूतों का इतिहास अमर हो गया वैसा अन्य किसी कौम के सतत नहीं हुआ। उसका कारण यही है कि वह अपने स्वयं के लिए नहीं बल्कि अन्यों के लिए, देश के लिए, संस्कृति के लिए, मानवता के लिए लड़े। महाराणा प्रताप ने मातृभूमि के सम्मान के साथ समझौता करने से इंकार कर दिया और अपने स्वार्थ पर स्वतंत्रता को महत्व दिया, इसीलिए जन-जन के हृदय में उनका स्थान सर्वोपरि हो गया। हमारे रक्त में यह विशेषता हैं कि हम सभी को साथ लेकर चलते हैं। मानवता को हम कभी भी अपने स्वार्थ के लिए दांव पर नहीं लगा सकते। हमारी इन विशेषताओं के कारण ही हमारा सम्मान रहा। सभी को साथ लेकर चलना एक सच्चे राजपूत की पहचान है। सिद्धांत के लिए यदि प्राण भी देने पड़े तो राजपूत पीछे नहीं हटता लेकिन अपने स्वार्थ के लिए वह कभी भी सिद्धांत से समझौता स्वीकार नहीं करता। अपने प्रण पर अड़े रहने के कारण ही प्रताप हम सभी के पूज्य है। आज श्री क्षत्रिय युवक संघ की विचारधारा के समाज में प्रसार की अत्यंत आवश्यकता है क्योंकि केवल सत्ता, शस्त्र और संपत्ति तो कोई भी हासिल कर सकता है लेकिन उत्तम चरित्र के बिना यह सभी विनाशक बन जाते हैं। इसीलिए संघ के संस्कार निर्माण के, चरित्र निर्माण के कार्य की आज समाज और राष्ट्र को महत्ती आवश्यकता है।

गुजरात सरकार में शिक्षा मंत्री भूपेंद्र सिंह चुडासमा ने अपने उद्बोधन में कहा कि पूज्य तनसिंह जी के साथ 1967 में एक सात दिवसीय शिविर करने का मुझे अवसर मिला था और वही संस्कार आज भी मुझे प्रेरणा दे रहे हैं, मेरे काम में आ रहे हैं, ऐसा मैं अनुभव करता हूं। जिन महापुरुष को स्मरण करने के लिए हम आज इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए हैं उन्होंने वैभव और संपन्नता को ठुकरा कर अभाव और संघर्ष को स्वीकार किया लेकिन मुगलों की दासता स्वीकारने से इनकार कर दिया। ऐसे महापुरुषों का व्यक्तित्व हम सभी के लिए अनुकरणीय है। प्रताप ने हमें सिखाया कि राष्ट्रभक्ति, धर्मभक्ति और समाजभक्ति क्षत्रिय का कर्तव्य है। आज के समय में राष्ट्र, धर्म और समाज की रक्षा करने के लिए संगठन अत्यावश्यक है। इसीलिए हम सब संगठित होकर सभी के हित में कार्य करें यह समय की मांग है। महाराणा प्रताप जैसे महापुरुषों के जीवन से यदि हम कोई एक बात भी सीख ले तो भी हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा। इसलिए ऐसे कार्यक्रम बार-बार होने चाहिए ताकि हमारी युवा पीढ़ी हमारे महापुरुषों के सही इतिहास को जान सके और उनसे प्रेरणा ले सके। कार्यक्रम का संचालन केन्द्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची ने किया।

संघ के केन्द्रीय कार्यक्रम के अतिरिक्त भी अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए, उनके समाचार अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

-अभयसिंह रोड़ला

'स्वयं को पहचानने के लिए पूर्वजों का स्मरण रखें'

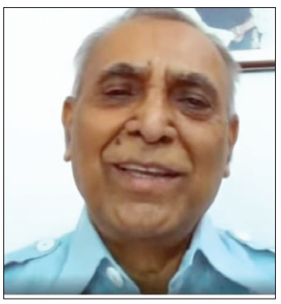

क्षत्रिय होना मेरे जीवन की अतिरिक्त विशेषता थी जिसने मेरी कार्य कुशलता को पुष्ट किया एवं जिसके कारण मुझे सदैव सम्मान मिला। यह कहना है विख्यात मौसम वैज्ञानिक एवं भारतीय मौसम विभाग के पूर्व महानिदेशक डा. लक्ष्मण सिंह राठौड़ का, जो श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की ओनलाइन वेबिनार श्रृंखला 'शख्सियत की कहानी, उन्हीं की जुबानी' के तहत 3 जून को समाज के लोगों के साथ अपने अनुभव साझा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि क्षत्रियता को कायम रखने एवं स्वयं को पहचानने में अपने पूर्वजों का स्मरण सदैव सहायक होता है। मुझे परिवार में बचपन से यही सिखाया गया कि तुम राजपूत हो, तुम्हे श्रेष्ठ होना चाहिए और बचपन की इस सीख ने शुचिता और ईमानदारी को जीवन में स्थापित किया और वही जीवन भर काम आई। उन्होंने कहा कि जिस कौम का इतिहास और साहित्य समाप्त हो जाता है वह कौम समाप्त हो जाती है। इसलिए हमें इस क्षेत्र में काम करने वाले हर व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए, ऐसा करने वाली जातियों का सम्मान करना चाहिए एवं स्वयं को भी इस विषय में जागरूक होना चाहिए। अपनी जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों की विवरण देते हुए उन्होंने बताया कि उनके जीवन के पीछे सर्वाधिक प्रेरणा उनकी माताजी की रही। वे गांव में एक खेजड़ी पर टंगे झंडे को देखकर कहा करती थीं कि तुम्हें इसी की भांति ऊंचाइयों तक फहराना है और अंतरराष्ट्रीय सेमिनार्स में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए जब मैं तिरंगे झंडे के साथ बैठता रहा हूं तब मुझे सदैव उनकी वह बात याद आती है। साक्षात्कार के स्वरूप में हुए इस कार्यक्रम में प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार नागौर जिले के छोटे से गांव शंखवासी से प्रारंभ हुई उनकी यात्रा अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व में परिणत हुई। अपनी प्रारंभिक शिक्षा से लेकर पी एच डी की पढाई तक के अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि जब वे पहली बार मौसम विभाग में नौकरी के लिए गये तो उन्हें यह कहकर हतोत्साहित किया गया कि आप कृषि विज्ञान के विद्यार्थी हैं और यहां सफल नहीं हो पायेंगे लेकिन अपनी लगन और मेहनत के बल पर ना केवल वे सफल मौसम विज्ञानी बने बल्कि उसी विभाग के प्रमुख बनकर भारतीय मौसम विज्ञान को नई ऊंचाईयों तक लेकर गये। उन्होंने बताया कि अवसर हर व्यक्ति के द्वार खटखटाते हैं, यदि आपके द्वार खुले हैं और आप उसका स्वागत करते हैं तो आपके द्वार आगे से आगे खुलते जाते हैं। ऐसा ही अवसर था अंटार्कटिका महाद्वीप पर भारत का केन्द्र स्थापित करने का था। अवसर मिला और उन्होंने आगे होकर स्वयं को प्रस्तुत किया जिससे उनके व्यक्तित्व में एक बड़ा मोड़ आया और आज वे भारत की मौसम विज्ञान विदेश नीति के पर्याय बन गये। डा. लक्ष्मण सिंह आज सेवानिवृत्ति के बाद भी संयुक्त राष्ट्र सहित विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं और विभिन्न देशी विदेशी संस्थाओं के साथ प्रतिदिन 7 से 8 घंटे कार्य करते हैं। साथ ही मौसम विभाग के महानिदेशक के साक्षात्कार के समय की विपरीत परिस्थितियों का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि उस समय उनके आंतों के कैंसर का उपचार चल रहा था, शरीर अशक्त था फिर भी चिकित्सकों से विशेष अनुमति लेकर उन्होंने साक्षात्कार दिया और भारत के मौसम विभाग का नेतृत्व करने का अवसर पाया। उन्होंने अपने जीवन के एक अन्य पहलु का विवरण देते हुए बताया कि यह विडंबना है कि सर्वाधिक समृद्ध शब्दकोश वाली राजस्थानी भाषा संविधान के अनुच्छेद 8 का भाग नहीं बन पाई है लेकिन हमें इसके संरक्षण का प्रयास करना चाहिए और इसीलिए उन्होंने कुछ लोगों के सहयोग से राजस्थानी भाषा के शब्दकोश का डिजिटलीकरण करना प्रारंभ किया। बाद में उसमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी मिला और कुछ ही समय में यह कार्य पूर्ण भी हो जायेगा। अपने साक्षात्कार के अंत में उन्होंने समाज के युवाओं के लिए संदेश दिया कि आज का युग विज्ञान का युग है, भविष्य में इसका आधार बढ़ता जाएगा इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि विज्ञान पढें, इसे अपना कैरियर बनायें, इसमें असीम संभावनाएं हैं। इसमें कोई सेवानिवृत्ति भी नहीं है, जब तक आप जिंदा हैं, वैज्ञानिक हैं। **जीवन में सफलता के लिए थोड़ा जुनून, उससे कुछ अधिक हौंसला और आवश्यक अनुभव तीनों का सम्मिश्रित प्रयोग करना चाहिए।** जूनून आपसे वह करवा लेता है जो आपको असंभव लगता है, हौंसला आपसे वह करवा सकता है जो आप करना चाहते हैं और अनुभव आपसे वह करवाता है जो आपको करना चाहिए। इसलिए इन तीनों का मिश्रित प्रयोग ही आगे ले जाएगा।

'शख्सियत की कहानी, उन्हीं की जुबानी' के तहत ही 30 मई को 2019 की आईएएस परीक्षा में 72वीं रैंक हासिल कर छत्तीसगढ़ कैडर में प्रशिक्षण के अंतिम दौर से गुजर रहे दिलीप सिंह शेखावत की कहनी उन्हीं की जुबानी बताई गई। उन्होंने बताया कि मैं जब तैयारी कर रहा था उस समय किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ने का अवसर नहीं मिला जो स्वयं इस दौर से गुजरा हो इसीलिए यह चाह रहती है कि मैं ऐसे अवसर का उपयोग करुं जब मेरे अनुभव अब तैयारी करने वाले लोगों को मिल सके। उन्होंने कहा कि मेरे पास संसाधन पर्याप्त नहीं थे लेकिन मेरी प्रेरणा इतनी मजबूत थी कि सब सहयोग जूटते गये। उन्होंने कहा कि हम जो करना चाहते हैं वह क्यों करना चाहते हैं, यदि यह स्वयं में स्पष्ट हो जाये तो फिर लक्ष्य के लिए प्रयास आसान हो जाता है इसलिए पहली आवश्यकता है कि हम हमारी वास्तविक प्रेरणा को ढूंढ लें। उन्होंने कहा कि मुझे ऐसी प्रेरणा इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान सामाजिक कार्यों में सक्रियता से मिली। जब हम तैयारी कर रहे होते हैं तब हमें किसी प्रकार का विकल्प नहीं रखना चाहिए। जब हम हमारे संकल्प का विकल्प रखते हैं तो लक्ष्य के प्रति एकाग्र नहीं हो पाते। बड़े लक्ष्यों के लिए हार्ड वर्क के साथ साथ स्मार्ट वर्क आवश्यक है। अपनी श्रेष्ठताओं और कमजोरियों को देखना आना चाहिए और उसी के अनुरूप योजना बनाकर तैयारी करनी चाहिए। यदि आपकी प्रेरणा सच्ची होती है तो जिस क्षेत्र में आप कमजोर होते हैं उसमें भी मजबूत बन जाते हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

जांगल प्रदेश के राजवंश

(इतिहास विषयक विचार गोष्ठी)

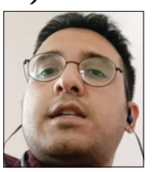

किसी भी राष्ट्र या समाज के लिए उसका इतिहास एक अमूल्य धरोहर होता है। हमारे समाज का गौरवशाली इतिहास भी हमारे लिए अमूल्य धरोहर है, लेकिन इतिहास के अनेक पृष्ठों की जानकारी वर्तमान समय में हमें अत्यन्त अल्प है जिसके कारण हम उससे प्रेरणा नहीं ले पाते हैं। इतिहास के ऐसे ही अनछुए पृष्ठों में से है जांगल प्रदेश का राव बीकाजी के यहां आगमन से पूर्व का इतिहास। जांगल प्रदेश में वर्तमान समय के बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, गंगानगर, हिसार व नागौर का कुछ भाग शामिल था। इस प्रदेश की संस्कृति निर्माण में, सुव्यवस्थित शासन प्रणाली देने में, यहां निवास करने वालों का रक्षण करते हुए एक सुदीर्घ शासन व्यवस्था देने वाले उन क्षत्रिय वंशों के बारे में प्रायः जानकारी का अभाव दिखाई देता है। उन सभी के बारे में सामान्य परिचय सभी तक पहुंचे, इस उद्देश्य को लेकर श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा एक वर्चुअल संगोष्ठी का आयोजन 2 जून को किया गया। संगोष्ठी में भाग लेते हुए आदित्यसिंह वेरा जैतपुरा ने जांगल प्रदेश की एक प्रमुख क्षत्रिय वंश जोहियों के बारे में बताया। उन्होंने जोहियों के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जोहिया प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश यौधेय था जो कालान्तर में अपभ्रंश होते हुए जोहिया कहलाने लगे। महाभारत काल के बाद इनका शासन लम्बे समय तक पूर्वी पंजाब, उत्तरी राजस्थान तथा पश्चिम उत्तरप्रदेश में रहा। रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में इनकी वीरता का प्रभावशाली वर्णन किया गया है। लम्बे सयम तक स्वतंत्र शासकों के रूप में शासन करने के बाद कालान्तर में ये सामन्त शासकों की श्रेणी में आ गए। सपादलक्ष में चौहानों के उत्कर्ष के काल में ये उनके निकटवर्ती सहयोगी बने और उनके राज्य विस्तार के लिए किए गए सैनिक अभियानों में प्रमुख भूमिका निभाई। विग्रहराज चतुर्थ जोहियों के ही दोहित्र थे। चौहानों के शिलालेखों में जोहियों का वर्णन आता है। राव बीकाजी के बीकानेर बसाने तक इस क्षेत्र को जोहियों ने अपने पुरुषार्थ से प्रभावित किया। दुर्भाग्य की बात यह है कि हम हमारे पूर्वजों के इस गौरवशाली इतिहास से अनभिज्ञ है। वर्तमान में जोहिया और खराल वहावलपुर क्षेत्र में अधिक मिलते हैं। लोकेश्वर सिंह मेहरोली ने जांगल प्रदेश पर लम्बे समय तक शासन करने वाले सांखला और चाहिल वंश के बारे में बताया। लोकेश्वर सिंह ने बताया कि मध्य भारत और राजस्थान में परमारों का शासन रहा। परमारों की जो अलग-अलग शाखाएं थी उनमें से किराडू की परमार शाखा के प्रसिद्ध धरणी वाराह के पुत्र छाड़ा के पुत्र सांखला से परमारों की सांखला खांप चली। सांखलों का मारवाड़ में जो प्रमुख राज्य था वो था रुणकोट। रुणकोट के सांखलों में रायसी सांखला हुए जो महत्वाकांक्षी और पुरुषार्थी पुरुष थे। वे अपने बल से नए राज्य की स्थापना करना चाहते थे। रायसी ने नए राज्य की स्थापना के लिए जांगलू प्रदेश की ओर कूच किया और सर्वप्रथम अपना जो केन्द्र बनाया वो था नोखा के नजदीक मोहिलों का एक ठिकाना जिसे जीतकर रायसी ने रासीसर नाम से बसाया। इसके बाद रायसी ने दहियों से जांगलूं विजित किया और उसे अपने राज्य का केन्द्र बनाया। धीरे-धीरे सांखलों ने अपने राज्य का विस्तार किया और व्यापारिक मार्ग के रूप में उस क्षेत्र को विकसित किया। सांखलों के शासन काल में ये क्षेत्र काफी समृद्ध बन गया, जिससे कारण ये लूट-पाट करने वाली खानबदोश जातियों, जिनमें बलोच प्रमुख थे, उनके लिए लक्ष्य बन गया। बलोचों से लगातार संघर्ष के कारण सांखलों की शक्ति काफी क्षीण हो गई और उनकों सहायता की आवश्यकता पड़ी। जांगलू के शासक नापा जी सांखला जोधपुर गए जोधाजी से सहायता के लिए और उनकी सलाह से ही राव बीका नए राज्य के निर्माण के लिए इस क्षेत्र में आए और सांखला यहां बीकाजी के सहयोगी बन गए और उनके विश्वासपात्र बने रहे। एक अन्य वंश/खांप जिसने अपने कृतित्व से जांगल प्रदेश के इतिहास में महत्वपूर्ण है वो है चौहानों की एक खांप चाहिल (चोयल)। चौहन शासक मुनि के वंशजों में से चोयल खांप हुई। यहां चोयल ने धांधू बसाया जिनके कुछ पीढ़ियों बाद जेवरसिंह ने ददेरवा को राजधानी बनाकर राज्य विस्तार किया। जिनके पुत्र गोगाजी लोकदेवता के रूप में जन-जन के हृदय में प्रतिष्ठित है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संपादकीय

हम भूलते भी हैं और माफ भी कर देते हैं

प्रायः हम एक कहावत सुनते आये हैं, 'न भूलो न माफ करो'। किसको न भूलें, किसको न माफ करें? जिसने हमारे साथ द्रोह किया है, जिसने हमारा नुकसान पहुंचाया है, हमें दुखी किया है एवं हमारे से शत्रुता पूर्ण व्यवहार किया है। हम से क्या अर्थ है? हम एक परिवार हो सकते हैं, हम एक समाज हो सकते हैं, हम एक राष्ट्र हो सकते हैं। यहाँ इस आलेख में हम शब्द को हमारे समाज के लिए मानकर बात को आगे बढ़ायेंगे। तब प्रश्न उठता है कि हम समाज रूप में किसे न भूलें और किसे माफ न करें? पूज्य तनसिंह जी का स्पष्ट मार्गदर्शन है, 'तुम हैहुलराय को मारो, मैं गोरी को'। हमने तराईन के युद्ध में पृथ्वीराज द्वारा स्थापित आदर्श का या जालोर के युद्ध में हीरा दे द्वारा स्थापित आदर्श का क्या अनुकरण किया है? क्या आज भी कर पा रहे हैं? क्या हमने अपने व्यक्तिगत हितों या व्यक्तिगत पसंद नापसंद के कारण समाज को हानि पहुंचाने वाले लोगों को माफ करना छोड़ दिया है? क्या हम उनके उस दुष्कृत्य को याद रख पाते हैं? ऐसा नहीं हो पाता, हम भूलते भी हैं और माफ भी कर देते हैं और वह इसलिए कि हमारे जीवन के केन्द्र में समाज नहीं है। हम आज भी समाज के नाम पर किसी व्यक्ति से जुड़े हुए हैं, समाज से नहीं। आप यह कह सकते हैं कि समाज तो अमूर्त सत्ता है, वह प्रकट तो किसी व्यक्ति में ही होती है। आपका तर्क सही है, समाज की सत्ता भी किसी व्यक्ति या संगठन में ही मूर्त होगी लेकिन यहाँ हमारे मूल्यांकन का स्पष्ट आधार है कि क्या उस व्यक्ति या संगठन के जीवन का केन्द्र समाज है? क्या वह अपने किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए तो समाज का सहारा नहीं ले रहा है? वह स्वार्थ केवल धन या पद का ही नहीं होता बल्कि प्रसिद्धि का स्वार्थ भी इन सबसे अधिक ही घातक होता है। इस परिभाषा में जो व्यक्ति या संगठन आता है उसे हम समाज का मूर्तिमान स्वरूप मान सकते हैं। इस परिभाषा के बाद हम मूल विषय पर लौटें और पूज्य तनसिंह जी के इस मार्गदर्शन पर विचार करें कि रावण की परंपरा उतनी बूरी नहीं है जितनी विभीषण की परंपरा है और इसी परंपरा को अवरुद्ध करने के लिए हमें ऐसा करने वालों को न भूलना है और ना ही माफ करना है। जब तक हम भूलते रहेंगे और माफ करते रहेंगे तब तक यह श्रृंखला आगे चलती रहेगी और हमारा समाज अपने शरीर पर ऐसे ही घाव खाता रहेगा अथवा पुराने घावों में पड़ी मवाद उसे शनैः शनैः क्षीण करती रहेगी। हम जब तक भूलना और माफ करना जारी रखेंगे तब तक यह क्रम जारी रहेगा और जिस दिन से याद रखना व क्षमतानुसार दंड देना शुरू कर देंगे उस दिन विभीषण की संतानों की नसबंदी हो जाएगी लेकिन क्या हम इसके लिए तैयार हैं? श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी तैयारी के लिए उद्यमशील है। यहाँ यही सिखाया जाता है कि समाज मेरा माई बाप है, संगठन उसका मूर्तिमान स्वरूप है, इससे द्रोह करने वाला चाहे कितना बड़ा ही नेता हो या अभिनेता हो, चाहे अधिकारी हो या कर्मचारी हो, चाहे पत्रकार हो या साहित्यकार हो, चाहे अमीर हो या गरीब हो, मेरे लिए त्याज्य है, धूल समान है। हो सकता है मेरा माई बाप मूर्तिमान समाज उसको कभी माफ कर दें लेकिन मैं कैसे माफ कर सकता हूं? कैसे भूल सकता हूं? इसके अलावा परंपरा तो रावण की भी जारी है, मेरे इस समाज पर बाहरी आक्रमण सदा से जारी हैं। इस समाज ने इन आक्रमणों से सदैव लोहा लिया है, इस देश से बाहर से आने वालों से भी लोहा लिया है और इस देश में मौजूद भीतरी शत्रुओं से भी लोहा लिया है। आजादी के बाद तो बाहर की अपेक्षा भीतरी आक्रमण अधिक हुए हैं और तीव्रता से हुए हैं। आज भी जारी हैं, मैं उनको भी कैसे भूल सकता हूं और माफ भी कैसे कर सकता हूं? लेकिन वास्तविकता यह है कि मैं भूलता भी हूं और माफ भी करता हूं। केवल अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण ही भूलता हूं ऐसा भी नहीं है बल्कि कुछ कुछ मेरी भूलने की आदत सी पड़ चुकी है। अपनी व्यक्तिगत उदारता के कारण भी मैं माफ भी कर देता हूं और करता ही जा रहा हूं। मैने जिन्होंने मुझे आततायी कहा उनको भूला दिया, जिन्होंने मुझे शोषक कहा उन्हें भूला दिया, जिन्होंने मुझे राजनीतिक और आर्थिक रूप से पंगु बनाया उनको भूला दिया और जब सत्ता के समीकरण बदलने लगे तो उन्होंने अपना पाला बदला और वे फिर सत्ता की चासनी चाटने लगे लेकिन मैं तो फिर उनको भूलता व माफ करता गया। वे मेरे सामने नित नये अवरोध और विरोध खड़े करते रहते हैं, अलग अलग भूमिकाओं में खड़े करते रहते हैं, मैं न उनकी उन भूमिकाओं को समझ पाता हूं और न उनके अवरोधों को। मेरा स्वभाव प्रतिक्रियावादी है, प्रतिहिंसा भी मेरे में है लेकिन जितनी तीव्र ये हैं उतनी ही तीव्र भूलने और माफ करने की आदत भी है इसलिए मेरी कोई भी प्रतिक्रिया सही दिशा पकड़ कर परवान चढे उससे पहले ही वे मेरी प्रतिक्रिया के लिए नया भोजन परोस देते हैं और उस भोजन में मशगूल होकर मैं उससे पहले वाले विषय को या तो भूल जाता हूं या माफ कर देता हूं। आजकल तो सोशल मीडिया का दौर है, तथ्यों और भ्रमों दोनों का प्रसारण तीव्र गति से होता है। मैं पहले वाले तथ्यों और भ्रमों को समझुं उससे पहले नये तथ्य और भ्रम परोस दिए जाते हैं और मैं पहले वालों को भूल जाता हूं। विगत वर्ष भर के समय का ही आकलन करें तो हमारे सामने स्थिति स्पष्ट हो जाती है। हमारे इतिहास पर बदनीयति से सरकारी चोट की गई, तथ्यों को बदल कर भ्रामक तथ्यों का सरकारी सहयोग से प्रमाणीकरण किया गया। हम आंदोलित हुए, बात ने जोर पकड़ा तब तक हमारे ही लोगों के माध्यम से बड़ी चतुराई पूर्वक उसकी हवा निकाल दी गई। हम धीरे धीरे भूल गये, बदनीयति को भूल गये लेकिन हमारे प्रतिक्रियावादी स्वभाव को तो भोजन चाहिए इसलिए हमने बदनीयति को छोड़कर बदजुबानी को पकड़ लिया और आश्चर्य तो तब हुआ जब बदनीयत लोग बदजुबानी के विरोध में मेरे साथ हो गये। हमें यह भूला दिया गया कि बदजुबानी से बदनीयत बहुत अधिक खतरनाक होती है। उनका काम हो गया। कालांतर में मैं बदनीयति की ही तरह बन्दजुबानी को भी भूल गया। हमारे साथ सामराउ घटित हुआ हम भूल गये, हमें हाथरस के समय वर्ग विशेष के गुंडे कहकर संबोधित किया गया हम भूल गये, हमारे साथ मधुबनी घटा हम भूल गये, हमारे साथ हरनावा घटित हुआ है और हम इसे भी भूल जायेंगे क्योंकि हमारा भूलने और माफ करने का स्वभाव बन चुका है। इस स्वभाव को बदलने पर ही हम याद रख पायेंगे और जब याद रखना सीख जायेंगे तब उफनना नहीं उबलना शुरू होंगे। जब तक धैर्य पूर्वक उबलते रहेंगे हमें उस आंच का भी स्मरण बना रहेगा जो हमारे उबलने का कारण है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी

व्यवस्था को विकृत करती व्यवस्थापिका

आजादी के बाद भारत में लागू हुए संविधान में शक्ति पृथक्करण के सिद्धांत को स्वीकार किया गया। भारत को राज्यों का संघ बनाते हुए राज्यों और केन्द्र की शक्तियों का पृथक्करण कर सीमाएं तय की गई वहीं व्यवस्थापिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका के भी क्षेत्राधिकार निर्धारित कर शक्तियों को परिभाषित किया गया। व्यवस्थापिका को जहां कानून बनाने, व्यवस्था को चलाने के नियम कायदे बनाने का कार्य दिया गया वहीं कार्यपालिका को उन नियम कायदों के अनुरूप शासन चलाने का कार्य सौंपा गया। न्यायपालिका का क्षेत्राधिकार यह तय किया गया कि वह इन नियम कायदों का उल्लंघन करने वालों को दंडित करें। बाहर से देखने पर यह व्यवस्था शक्ति पृथक्करण का आदर्श लगती है लेकिन इसके व्यवहारिक पक्ष को देखें तो दूसरी ही तस्वीर उभरती है। व्यस्थापिका में से कार्यपालिका का चयन होता है और वह उसके समर्थन पर्यन्त ही बनी रह सकती है। इसी प्रकार राजनीतिक दलों का व्यवस्थापिका के सदस्यों पर इतना कड़ा नियंत्रण होता है कि कार्यपालिका के संभावित प्रमुख की ईच्छा से ही व्यवस्थापिका के सदस्य बनने का मार्ग खुलता है। न्यायपालिका के चयन में जहाँ कार्यपालिका की पर्याप्त दखलंदाजी होती है वहीं संवैधानिक समीक्षा के नाम पर न्यायपालिका प्रायः दखलंदाजी करती रहती है। इस प्रकार पूरी व्यवस्था बाहर से जितनी अलग अलग दिखती है वहीं आपस में अस्वाभाविक रूप से उलझी हुई है। हम प्रायः न्यायपालिका और कार्यपालिका की आपसी खिंचातानी के समाचार पढ़ते रहते हैं और यह सामान्य दृष्टिकोण बन गया है कि ये दोनों अपने अपने क्षेत्राधिकार का उल्लंघन कर एक दूसरे के काम में हस्तक्षेप करते रहते हैं। कभी इनको तो कभी उनको दोष देते रहते हैं लेकिन यदि गहराई से देखें तो व्यवस्थापिका और कार्यपालिका का आपसी हस्तक्षेप व्यवस्था के लिए अधिक घातक है क्योंकि उनका साझा स्वार्थ उन्हें साथ आने और फिर साथ आकर व्यवस्था को निचोड़ने को लालायित करता है। उनके इस नापाक साझा स्वार्थ ने वर्तमान व्यवस्था को जितनी हानि पहुंचाई है और निरंतर पहुंचाई जा रही है, उसकी भरपाई संभव नहीं है। यह साझा स्वार्थ व्यस्थापिका के लिए होने वाले चुनावों में टिकट पाने से प्रारंभ होता है और अंत तक अपनी भरपाई के लिए व्यवस्था का शोषण करता रहता है। कार्यपालिका का राजनीतिक नेतृत्व उसकी धूरी होता है और उसका चयन व्यवस्थापिका के सदस्य करते हैं और इसीलिए वे कार्यपालिका की सत्ता में भागीदारी चाहते हैं और यहीं से प्रारंभ होता है व्यवस्थापिका द्वारा व्यवस्था का विकृतिकरण। राज्यों की सरकारों में इसके उदाहरण अधिक देखे जा सकते हैं। संविधान ने विधायक को किसी प्रकार के कार्यकारी अधिकार नहीं दिए हैं, यहां तक कि उसके हस्ताक्षर से राजकोष से एक पैसा भी नहीं उठाया जा सकता। विधायक कोष का प्रावधान भी मूल संविधान में नहीं है और बाद में लागू हुई इस व्यवस्था में भी विधायक केवल अनुषंसा कर सकता है, निर्णय कार्यपालिका का ही होता है। लेकिन क्या ऐसा हो रहा है? संविधान के अनुसार विधायक का काम विधानसभा में अपने क्षेत्र की जनता के प्रतिनिधि बनकर नीति निर्धारण में सहयोगी बनने का होता है लेकिन व्यवहार में कितने विधायक ऐसा करते हैं? विधायक की रूचि विधायी कार्यों में प्राथमिकता के पायदानों में निम्नतम स्तर पर होती है लेकिन उसके क्षेत्र की कार्यपालिका के संचालन में उसकी रूचि प्राथमिकता के सर्वोच्च स्तर पर होती है। इसी कारण उसके क्षेत्र में पटवारी, ग्राम विकास अधिकारी, कानिस्टेबल, शिक्षक से लेकर उस क्षेत्र के सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी तक की नियुक्ति में वह अपनी पंचायती चाहता है और इसीलिए सत्ता पक्ष के विधायक सत्ता के मालिक माने जाते हैं और विपक्षी विधायक बिचारे बनकर किसी शिलान्यास या उद्घाटन की पट्टिका में अपना नाम लिखवाने को भी तरसते रहते हैं। इस प्रकार तय है कि विधायक इसलिए नहीं बनते कि व्यवस्थापिका में अपने दायित्व का निर्वहन कर अपने क्षेत्र की जनता के हित में नीति निर्माण कर सकें बल्कि इसलिए बनते हैं कि अपने जिले में अपने अनुसार चलने वाले अधिकारी व कर्मचारी लगा सकें। उन अधिकारियों से अपने पक्ष के लोगों के वैध अवैध काम करवा सकें।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

द्रोहियों के प्रति व्यवहार में पृथ्वीराज आदर्श- बैण्यांकाबास

(पृष्ठ एक से लगातार)

समाज के द्रोहियों के प्रति पृथ्वीराज चौहान का जो दृष्टिकोण था उस दृष्टिकोण को आज समाज में पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है तभी ऐसे द्रोहियों की जमात समाप्त होगी। संघ हमेशा से ही समाज द्रोहियों के प्रति असहिष्णु रहा है। हैहुलराय जैसे मौकापरस्त और अपने स्वार्थ में अंधे हुए लोगों के साथ पृथ्वीराज चौहान जैसा बर्ताव करना ही समाज हित में होगा, इसके लिए ऐसे लोगों से हमें संघर्ष करना भी पड़े तो इसके लिए हमें सदैव तैयार रहना होगा और श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी सिद्धांत पर कार्य करता है। लक्ष्मण सिंह जी बैण्यांकाबास ने बताया कि आज पृथ्वीराज चौहान और हर्षवर्धन दोनों की ही जयंती है, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। हमारे प्रबुद्ध जनों ने कार्यक्रम के दौरान इनके संबंध में जो विस्तृत जानकारी प्रदान की है, उस के आधार पर हम देख सकते हैं कि हमारी राजपूत कौम का जो इतिहास है वैसा इतिहास शायद ही विश्व में किसी अन्य जाति का होगा। हम सभी जानते हैं कि हमारा भारतीय इतिहास बहुत ही विसंगतियों से भरा पड़ा है। यह विडंबना ही है कि हमारे ऐसे ऐतिहासिक महानायकों की उपेक्षा की गई और उन पर कोई प्रमाणिक ऐतिहासिक पुस्तक तक भी उपलब्ध नहीं है। इसके लिए विस्तृत शोध के बाद सही दृष्टिकोण के साथ निष्पक्ष इतिहास तैयार करना आज के समय की महत्ती आवश्यकता है। वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. आर एस खंगारोत ने बताया कि उनका प्रारंभिक जीवन कठिनाइयों में बीता। उनकी माता ने एक संरक्षक के रूप में भावी जिम्मेदारियों के लिए उन्हें तैयार किया। प्राचीन भारत के अंतिम महत्त्वपूर्ण हिन्दू शासक माने जाने वाले हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात हिंदुस्तान एक केंद्रीय सत्ता के अभाव में राजनैतिक रूप से कमजोर पड़ चुका था। सातवीं शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी तक यह स्थिति बनी रही। मध्यकालीन इतिहास के प्रारम्भ में पृथ्वीराज चौहान ने उत्तर भारत में एक सुदृढ और सशक्त शासन स्थापित किया। इस प्रकार सदियों की राजनैतिक अस्थिरता को समाप्त करके केंद्रीय सत्ता की स्थापना पृथ्वीराज द्वारा की गई। उनके सम्राट बनने के समय उनके साम्राज्य के चारों ओर सिंध, मुल्तान और पंजाब के मुस्लिम राज्य, कन्नौज में राठौड़ो की रियासत, गुजरात के सौलंकी, दक्षिण पूर्व में महोबा के चंदेल और बंगाल के पालवंश जैसे कई छोटे-छोटे राज्य और राजवंश स्थापित थे। पृथ्वीराज ने अशोक की भांति दिग्विजय की नीति अपनाते हुए अपने साम्राज्य का विस्तार किया। इस दौरान उन्हें अपने साम्राज्य पर होने वाले विदेशी आक्रमणों का सामना करना पड़ा। इन युद्धों में उनका अद्भुत युद्ध कौशल, देशप्रेम और उदारता आदि गुण प्रकट होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि मुहम्मद गौरी के संबंध में महाराजा जयचंद द्वारा उसे भारत पर आक्रमण के लिए आमंत्रित करने की जो बात कही जाती है वह निराधार, तथ्यहीन और अप्रामाणिक है। उन्होंने सम्राट हर्षवर्धन का उल्लेख करते हुए कहा कि वे प्राचीन भारत के अंतिम सम्राट माने जाते हैं और पृथ्वीराज मध्यकालीन भारत के प्रथम। यह सुखद संयोग है कि हम आज दोनों की जयंती मना रहे हैं। नवोदित इतिहासकार वीरेंद्र सिंह मेड़तिया ने पृथ्वीराज चौहान के संबंध में ऐतिहासिक जानकारियां साझा करते हुए बताया कि चौहान शब्द की व्युत्पत्ति चाहमान शब्द से हुई है जिसकी पुष्टि प्रारंभिक शिलालेखों, ग्रंथों आदि से होती है। धीरे-धीरे मध्यकाल की भाषाओं में यह चाहमान से चौहान हो गया। इस वंश के मूल पुरुष चाहमान थे जो 525-530 ईसवी के आसपास के समय में हुए। उस काल में सांभर चाहमान का क्षेत्र था। सांभर का क्षेत्र अपनी भौगोलिक तथा रणनीतिक स्थिति के कारण हूणों के विरुद्ध अनिवार्य रूप से युद्ध स्थली बना। विभिन्न ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर चौहान वंश के मूल पुरुष चाहमान का समय छठी सदी के प्रारंभ में निश्चित किया जा सकता है। चौहान वंश के अधिकांश शासकों को सूर्यवंशी बताया गया है। कुछ ग्रंथ चौहानों को अग्निवंशी भी बताते हैं किंतु 16 वीं शताब्दी से पूर्व इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं मिलता। नागौर से सांभर तक का क्षेत्र, जो चौहानों का राज्य था उसको सपादलक्ष नाम से भी जाना जाता था क्योंकि इसमें सवा लाख गांव सम्मिलित थे। इसी चौहान वंश में पृथ्वीराज का जन्म 1162 ईस्वी में पाटन गुजरात में हुआ जो उस समय सोलंकियों (जिन्हें चौलुक्य के नाम से भी जाना जाता है) की राजधानी थी। बाल्यकाल में उन्हें छह भाषाएं सिखाई गई थी तथा सैन्य कौशल, औषध-मीमांसा, धर्म, गीत संगीत, कला, गणित आदि विभिन्न विषयों की गहन शिक्षा प्राप्त हुई थी। उनके पिता सोमेश्वर चौहान थे तथा त्रिपुरी राज्य के कलचुरी वंश की राजकुमारी कपूरी देवी उनकी माता थी। पृथ्वीराज के संबंध में यह किवदंती भी प्रचलित हैं कि उनके नाना अनंगपाल तोमर, जो दिल्ली के शासक थे, ने उन्हें गोद लिया था किंतु दिल्ली के लौह स्तंभ तथा अन्य ऐतिहासिक साक्ष्यों के अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट होती हैं की अनंगपाल तोमर पृथ्वीराज चौहान के समकालीन ना होकर उनसे कई दशक पूर्व हुए थे। पृथ्वीराज के समय दिल्ली के शासक मदनलाल तोमर थे जिसकी पुष्टि अनेकों जैन ग्रंथों से भी होती है। 1180 के दशक में पृथ्वीराज चौहान ने अपने राज्य का विस्तार किया जिसमें चंदेलों के विरुद्ध अभियान भी सम्मिलित हैं। शहाबुद्दीन गौरी और पृथ्वीराज के बीच विभिन्न ग्रंथों में अनेक युद्धों का उल्लेख है किंतु उनके बीच मुख्य रूप से तीन युद्ध हुए तथा सेनाओं के गश्ती दल आदि में छोटी-छोटी कई झड़पें हुई। इन तीन युद्धों में पहला युद्ध सतलज के बहाव क्षेत्र के आसपास 1182-83 ईसवी में, दूसरा युद्ध तराइन में 1190-91 में तथा तीसरा युद्ध तराइन में 1992-93 में हुआ। तराइन के दूसरे युद्ध में पराजय के पश्चात पृथ्वीराज को गौरी द्वारा बंदी बनाकर गजनी ले जाने की बात भी कही जाती हैं जो ऐतिहासिक रूप से सत्य नहीं है। उस समय के भारतीय तथा फारसी ग्रंथ पृथ्वीराज की अजमेर में मृत्यु का वर्णन करते हैं। आगे उन्होंने पृथ्वीराज के राष्ट्र बोध, धर्म बोध व नीति बोध के बारे में बताया कांग्रेस के वरिष्ठ नेता धर्मेंद्र सिंह राठौड़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैं सम्राट पृथ्वीराज चौहान और सम्राट हर्षवर्धन को नमन करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ का इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए आभार व्यक्त करता हूं। इस प्रकार के कार्यक्रम के माध्यम से पृथ्वीराज चौहान का वास्तविक इतिहास हमें पता चलता है और उनके बारे में जो भ्रांतियां प्रचलित हैं, वे भी दूर होती हैं। पृथ्वीराज चौहान को लगभग एक हजार वर्ष बाद भी हम लोग याद कर रहे हैं, उनकी जयंती मना रहे हैं, यह अपने आप में उनके व्यक्तित्व की महानता का जीवंत प्रमाण हैं। उनका जीवन हम सभी के लिए आज भी प्रेरणा स्रोत हैं। क्षत्रिय के रूप में हमें भी उनका अनुकरण करने की आवश्यकता है। जो वंचित हैं, कमजोर हैं उनकी सहायता करना और उन्हें सशक्त बनाना- यह भी हमारे क्षत्रिय धर्म का अंग है। जिस प्रकार से आज मनुष्य अपने लालच और स्वार्थ के कारण समाज को, संस्कृति को और प्रकृति को हानि पहुंचा रहा है उसे यदि नहीं रोका जाता है तो मानव जाति स्वयं अपने ही विनाश का कारण बन जाएगी। इसे रोकने का दायित्व क्षत्रिय को उठाना चाहिए क्योंकि यह उसका कर्त्तव्य है। अन्यों की सहायता के लिए जो भी संभव हो वह करना चाहिए, यही हमारा क्षत्रिय धर्म है और यही ऐसे महापुरुषों और हमारे पूर्वजों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-अभयसिंह रोड़ला

जांगल प्रदेश...

चायलों के राज्य में चुरू का राजगढ़, तारानगर, हिसार, फतेहाबाद आते थे और ये चायलवाड़ा कहलाता था। राव लूणकरण के समय ददरेवा पर बीकानेर राज्य का आक्रमण हुआ और युद्ध के वहां के चोयल कर्तव्य के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर वीरगति को प्राप्त हुए और ददरेवा पर बीकानेर राज्य का आधिपत्य हो गया। जांगल प्रदेश में अपना अलग प्रभुत्व रखने वाले मोहिलों के बारे में बताते हुए खींवसिंह सुलताना ने कहा कि वर्तमान बीकानेर के दक्षिण पूर्व का जांगल प्रदेश का सबसे उपजाऊ और हरा-भरा प्रदेश द्रोणपुर था जिसके बारे में मान्यता है कि इसे महाभारत काल में गुरु द्रोणाचार्य द्वारा बसाया गया था। महाभारत काल के बाद लम्बे समय तक इस क्षेत्र पर पहले डाहलिया परमारों का और बाद में बागड़ियों का शासन रहा। 11वीं शताब्दी में श्रीमोर के संजन चौहान के पुत्र मोहिल ने इसे बागड़ियो से जीत कर द्रोणपुर में मोहिल वंश की नींव रखी और राणा की उपाधि धारण की। राणा मोहिल और उनके वंशजों ने आसपास के क्षेत्रों को अपने पराक्रम से मोहिल राज्य को 1440 गांवों के राज्य में बदल डाला जिसकी दो राजधानियां द्रोणपुर और छापर थी। मोहिलों के प्रभाव से यह पूरा क्षेत्र मोहिलवाटी कहलाने लगा। मोहिल की वंश परम्परा में हरदत, वरसिंह, आसल, आहड़, माणकराव आदि प्रतापी शासक हुए। 15वीं शताब्दी में मोहिलवाटी में मोहिलों के तीन प्रमुख राज्य थे लाडनूं, द्रोणपुर और छापर। इधर जोधा जी के नेतृत्व में मारवाड़ राज्य का विस्तार हो रहा था। राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा में राव जोधा और मोहिलों में लम्बे समय तक संघर्ष चला, जिसमें आपसी द्वेष भावना के कारण मोहिलों को अंत में पराजय का सामना करना पड़ा और द्रोणपुर छापर में राव बीदा के नेतृत्व में राठौड़ का राज्य कायम हुआ। मोहिलों ने लगभग 5 शताब्दियों तक शासन किया और सुव्यवस्थित शासन प्रणाली से इस क्षेत्र को समृद्ध बनाया। इस वर्चुअल संगोष्ठी के आयोजन के बारे में बताते हुए रेवन्तसिंह पाटोदा ने कहा कि हमारे द्वारा इतिहास में रुचि ना लेने के कारण अन्यों द्वारा हमारे इतिहास का हनन किया जा रहा है, पाठ्यक्रमों में गलत तथ्यों के साथ हमारे इतिहास को विकृत किए जाने का प्रयास किया जा रहा है उससे हमारे इतिहास को संरक्षित करने, हमारे इतिहास को सहेजने और गलत तथ्यों का हम प्रतिकार तर्क सहित, प्रमाण सहित कर पाए उसके लिए आवश्यक है कि हम हमारे इतिहास को जाने, उसका अध्ययन करें और उस इतिहास से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े, यही आज के इस कार्यक्रम का उद्देश्य था।

केन्द्रीय शाखा में मिला व्यवहारिक मार्गदर्शन

संघशक्ति में लगने वाली साप्ताहिक शाखा के वर्चुअल प्रसारण में 30 मई को पूज्य श्री तन सिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या सात पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि हम अपने जीवन में जो कुछ करते हैं उसकी सार्थकता की कसौटी यह है कि उससे अन्यों को कितनी प्रेरणा मिलती है। यदि हमारा जीवन दूसरों के लिए अनुकरणीय नहीं बनता है तो वह सार्थक नहीं कहा जा सकता। श्री क्षत्रिय युवक संघ में बहुत से स्वयंसेवक आते हैं और संघ को समझने का, उसके अनुसार चलने का प्रयत्न करते हैं। किंतु संघ को जिसने ठीक प्रकार से समझा है और अपने जीवन में उतारा है वह स्वतः ही दूसरे स्वयंसेवकों के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाता है। ऐसे साधकों के कुशलक्षेम को स्वयं ईश्वर ही वहन करता है। जिनमें अनुशासन विकसित होता है उन्हें ईश्वरीय मार्गदर्शन अवश्य प्राप्त होता है। हमें भी अपने आप को इसी कसौटी पर कसना चाहिए कि हम जिस प्रकार का जीवन जी रहे हैं, क्या उससे अन्य साथियों को प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त हो रहे हैं? पूज्य श्री तन सिंह जी ने स्वयं ऐसा जीवन जी कर दिखाया कि हजारों लोग उनका अनुकरण करने का संकल्प लेकर संघ मार्ग पर निरंतर चल रहे हैं। कोई भी व्यक्ति केवल शब्दों से अथवा उपदेश से किसी का जीवन परिवर्तित नहीं कर सकता। जीवन व्यापी प्रभाव डालने के लिए शिक्षक को साधक के जीवन में गहरा उतरना पड़ता है और इसके लिए उसे अपने सिद्धांतों और आदर्शों की आधारभूमि स्वयं को बनाना पड़ता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तित्व निर्माण के अन्य जितने भी मार्ग हैं वे अंततः मिथ्या सिद्ध होते हैं। आगे उन्होंने स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए बताया कि संघ मार्ग पर चलते हुए विभिन्न प्रकार की बाधाएं हमारे

सामने आती हैं लेकिन संघ जैसा कहता है वैसा हम निष्काम भाव से करते जायें तो हमारे जीवन में अनिवार्य रूप से निखार आता है। लेकिन यदि कोई संघ के बताए हुए कर्म का पालन न करके अपने अनुसार चलता है तो उसका वह चलना संघ के दृष्टिकोण से अनुकूल न रहकर प्रतिकूल बन जाता है। इसलिए हमारे लिए यह आवश्यक हैं कि हम संघ के अनुशासन का सदैव पालन करें और निरंतर आत्मचिंतन द्वारा अपनी प्रगति का मूल्यांकन करते रहें। जहां कहीं हमें लगता है कि कोई कमी रह गई है उसे दूर करने का प्रयास करें और यदि हम स्वयं उसे दूर नहीं कर पा रहे हैं तो अपने शिक्षक और मार्गदर्शक से सहायता लेनी चाहिए। यही हमारे लिए विकास का सरलतम मार्ग हैं।

इसी प्रकार 6 जून को डायरी के अवतरण संख्या 21 पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से विकास करने की इच्छा होती है। यह इच्छा उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करती है किंतु आगे बढ़ने के लिए केवल इच्छा ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उसके लिए संघर्ष करने की क्षमता भी आवश्यक है। विकास की, श्रेष्ठता की ओर बढ़ने की चाह सतोगुणीय इच्छा है और संघर्ष के लिए साहस और निष्ठा जैसे गुणों की आवश्यकता होती है जो रजोगुणीय है। किसी भी महान कार्य का प्रारंभ होना तभी संभव है जब सतोगुण और रजोगुण की ये इच्छाएं एक साथ सक्रिय होकर कार्य करें। संकल्प शक्ति के बिना कभी भी महान कार्य घटित होना संभव नहीं है। दुर्बल संकल्प शक्ति व्यक्ति की आध्यात्मिक प्रगति को भी अवरुद्ध कर देती है क्योंकि सतोगुण जो कि अध्यात्म का आधार है, वह संघर्ष क्षमता के बिना दुर्बल बना रहेगा और कर्म में रूपांतरित नहीं हो सकेगा। शाखा में वर्चुअल माध्यम से जुड़े हुए स्वयंसेवकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए महावीर सिंह जी ने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वित मार्ग है। इसीलिए हम इसे संपूर्ण योग मार्ग कहते हैं। हम अपने स्वभाव के अनुसार कर्म, ज्ञान अथवा भक्ति के मार्ग से श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना कर सकते हैं। संघ क्षात्र धर्म का पालन करने की साधना करता है और क्षात्र धर्म का पालन उसके अनुरूप कर्म करके ही किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण से श्री क्षत्रिय युवक संघ का मुख्य मार्ग कर्म पर आधारित है किंतु इसमें कर्म योग के साथ-साथ ज्ञान और भक्ति योग भी पूर्ण रुप से निहित हैं। श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेड़ा का उदाहरण हमारे सामने है कि किस प्रकार उन्होंने तन सिंह जी के साथ रहकर संघ के कर्म योग को पूर्ण रूप से अपनाया, साथ ही केवल तन सिंह जी को ही अपना सर्वस्व मानकर भक्ति योग के मार्ग पर भी उसी निष्ठा से चले। उन्होंने जिस स्तर के बौद्धिक तैयार किए उससे यह सिद्ध होता है कि वह ज्ञान योगी भी थे। इस तरह से संघ की साधना में ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग तीनों ही उपलब्ध हैं और इन तीनों के ही माध्यम से अध्यात्म की साधना की जा सकती है लेकिन इसके लिए हमें अपने जीवन में संघ को ढालना आवश्यक है। केवल भौतिक उछल कूद करने को ही अध्यात्म नहीं कहा जा सकता बल्कि जिसने संघ को ईश्वरीय मार्ग माना है और उस पर निष्ठा पूर्वक चलता है उसी के जीवन में संघ तत्व विकसित होगा।

27 मई को पूज्य श्री तन सिंह जी रचित सहगीत 'मैं निर्झर हूं' पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा ने बताया कि जो अवतारी पुरुष होते हैं, महापुरुष होते हैं वे अपने जीवन के ध्येय को स्पष्ट रूप से जानते हैं और उसी के अनुरूप वह अपना जीवन जीते हैं। पूज्य श्री तन सिंह जी भी ऐसे ही महापुरुष थे और इस सहगीत में पूज्यश्री ने अपना ध्येय स्पष्ट किया है। वे हमारी सोई हुई कौम को जगाने के लिए आए थे, हमें कर्म योग का पाठ पढ़ाने के लिए आए थे। पतन की ओर जा रहे हमारे समाज को एक नई दिशा देने, उसे पुनः स्वधर्म पालन के मार्ग पर आरूढ़ करने के उद्देश्य के साथ तन सिंह जी ने अपना जीवन जिया। बिना अपने उद्देश्य को जाने निरंतर एक अंधी दौड़ में लगे हुए संसार को उसके उद्देश्य का स्मरण कराने के लिए तन सिंह जी का अवतरण हुआ। जिस प्रकार से निर्झर निरंतर बहता रहता है उसी प्रकार तन सिंह जी भी अपने उद्देश्य के लिए जीवन भर सतत रूप से कर्म रत रहे और अपनी तपश्चर्या से उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ को एक जीवंत तीर्थ बना दिया। वे अपना सपना श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में हमें सौंप कर गए हैं, अब यह हमारा कर्तव्य है कि इस सपने को साकार करने में हम अपने जीवन को नियोजित करें। इसी प्रकार 3 जून को 'मिटे तो हुआ क्या' सहगीत का अर्थबोध करते हुए उन्होंने बताया कि हमारे पूर्वजों ने अद्भुत इतिहास बनाया, एक अनूठी परंपरा स्थापित की और प्रेरक जीवन संदेश हम सब को प्रदान किया। पूज्य श्री तन सिंह जी इस गीत में कह रहे हैं कि आज हमारे वे सभी पूर्वज इस संसार में नहीं है लेकिन उनकी निशानी अभी तक बाकी है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी उसी त्याग और बलिदान की परंपरा का वाहक है। जो कहानी हमारे पूर्वजों ने प्रारंभ की वह कहानी अभी पूरी होनी है लेकिन हम, जिन पर उस कहानी को पूरा करने का दायित्व है, सोए हुए हैं। उसी सोए हुए कथाकार को अर्थात हम को जगाने का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। हमारे जीवन में फैले अज्ञान के अंधेरे को मिटाने के लिए ज्ञान के दीप संघ जला रहा है जिसके प्रकाश से बिछड़े हुए साथी भी अपने मार्ग को पहचान पा रहे हैं। हमारे पूर्वजों का रक्त हमारे भीतर अभी भी विद्यमान हैं उस वक्त की तासीर को जगाने का कार्य संघ कर रहा है। अहर्निश कर्मरत रहने पर ही यह कार्य संभव है।

10 जून को पूज्य श्री रचित 'हम कदम यों ही आगे बढ़ाते रहें' सहगीत का अर्थ बोध करते हुए अजीत सिंह जी ने कहा कि इस गीत में पूज्य श्री तन सिंह जी का यह विश्वास अभिव्यक्त हुआ है कि संघ अपने उद्देश्य को अवश्य प्राप्त करेगा। यदि हम साथ मिलकर संघ का कार्य निरंतर करते रहें तो असंभव को भी संभव किया जा सकता है। यदि हम एक बन कर, नेक बन कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे तो हम अपना भाग्य भी बदल सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में आमूल परिवर्तन लाने में सक्षम है और समाज की सभी समस्याओं का समाधान भी संघ की साधना में ही निहित है। महाभारत काल के बाद से हमारा जो पतन प्रारंभ हुआ है उसे रोकने का और उसे मोड़ कर पुनः उत्थान की ओर अग्रसर करने का उपक्रम है श्री क्षत्रिय युवक संघ। भले ही आज बीज रूप में संघ को पहचानने में सभी सक्षम नहीं हों लेकिन जो निष्ठा पूर्वक संघ के मार्ग पर बढ़ रहा है वह ईश्वरीय कृपा को स्पष्ट रूप से अनुभव कर सकता है। जो संघ मार्ग पर पूर्ण समर्पित होकर चलता है उसके लिए मार्ग की सभी बाधाएं उसकी सहायक बन जाया करती हैं। इसलिए हमें इस मार्ग पर सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ निरंतर बढ़ते रहना है।

(पृष्ठ तीन का शेष)

स्वयं को....

अपने जीवन को व्यवस्थित करके, अपनी तैयारी को व्यवस्थित करके एक संतुलन बनाकर ही हम लक्ष्य की ओर केन्द्रित हो सकते हैं। हमें हमारे इतिहास से प्रेरणा लेनी है केवल उस पर गर्व करके ही संतुष्ट नहीं होना चाहिए। हमारा इतिहास हमें हर परिस्थिति में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। जीवन में चुनौतियां कभी समाप्त नहीं होती है बल्कि नये नये रूप में सदैव रहती हैं इसलिए कभी भी चुनौतियों से निराश नहीं होना है। उन्होंने कहा कि हमारे पूरे बैच में अधिकांश लोग सामान्य परिवारों से हैं इसलिए पारिवारिक पृष्ठभूमि को लेकर बहुत प्रभावित नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि UPSC में हर वर्ष 180 लोग आई ए एस के रूप में चयनित होते हैं, यह देखें कि हम कहां हैं और उसके अनुसार तैयारी करें। तैयारी के लिए कोई विशेष परिस्थितियां ही आवश्यक नहीं हैं, किसी भी प्रकार की परिस्थिति में तैयारी संभव हैं, बस हम हमारी परिस्थिति को समझें और तद्नुकूल योजना बनाकर तैयारी करें। उन्होने UPSC की तैयारी के विभन्न तरीके साझा किए एवं बताया कि सबसे महत्वपूर्ण बात सच्ची प्रेरणा, स्मार्ट एवं हार्ड वर्किंग व व्यवस्थित जीवन ही है। यदि ऐसा कर लें तो लक्ष्य हासिल कर सकते हैं।

शेयर बाजार, कमोडिटी बाजार, करेन्सी बाजार, क्रिप्टो बाजार के लिए
“ टेक्निकल एनालिसिस बेसिक ओर एडवांस सीखे। ”
फ्री कॉल्स और जानकारी के लिए सम्पर्क करें
राजपाल सिंह करीरी - 9828080757

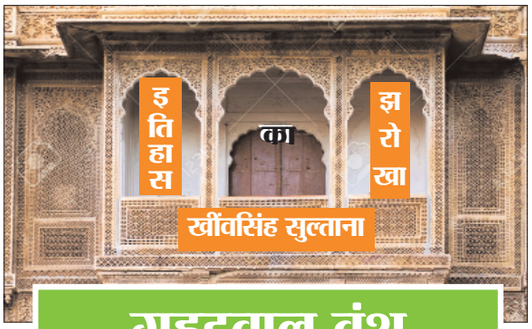

गहड़वाल वंश

मदनपाल के बाद उसका पुत्र गोविन्दचन्द्र गहड़वाल वंश का शासक बना। वह इस वंश का सर्वाधिक योग्य व शक्तिशाली शासक था। गोविन्दचन्द्र ने कन्नौज के गौरव को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। अपने पिता के शासन काल में हुई तुर्क आक्रमणकारियों का सफल प्रतिरोध कर गोविन्दचन्द्र अपनी योग्यता सिद्ध कर चुका था। गोविन्दचन्द्र ने सभी दिशाओं में सैनिक अभियान किए और विजय प्राप्त की। इन विजयों के बारे में गोविन्दचन्द्र के विभिन्न लेखों से पता चलता है। युवराज के रूप में गोविन्दचन्द्र ने गजनी के शासक मसूद तृतीय को पराजित किया था। उसके पाति लेख (1114 ई.) में कहा गया है कि उसने 'नवराज्यगज' पर अधिकार कर लिया जो घाघरा तथा बड़ी गण्डक नदी के मध्य स्थित था तथा वहां के शासक का नाम कीर्तिपाल था। लार (देवरिया) लेख से भी गोविन्दचन्द्र की इस क्षेत्र पर तथा अन्य कुछ क्षेत्रों पर विजय की जानकारी मिलती है। बंगाल और बिहार में इस समय पाल वंश का शासन था। गोविन्दचन्द्र के मनेर (पटना के निकट) से प्राप्त लेख से पता चलता है गोविन्दचन्द्र का पाल शासक रामपाल से युद्ध हुआ जिसमें गोविन्दचन्द्र को विजय प्राप्त हुई और पाल साम्राज्य के कुछ क्षेत्र पर गहड़वालों का आधिपत्य कुछ काल के लिए हो गया जिनमें मुंगेर और पटना का क्षेत्र शामिल था। गोविन्दचन्द्र ने कलचुरियों को परास्त कर सोन और यमुना नदी के मध्य के उनके कुछ क्षेत्र का गहड़वाल राज्य में सम्मिलित कर लिया और इस विजय के उपरान्त कलचुरि शासकों की कुछ उपाधियां अश्वपति, नरपति, राजत्रयाधिपति को धारण किया था। रंभामंजरी नाटक से गोविन्दचन्द्र की मालवा विजय के बारे में पता चलता है, संभवतः गोविन्दचन्द्र ने परमार यशोवर्मा को परास्त कर मालवा पर अधिकार किया था। मालवा विजय के दिन गोविन्दचन्द्र के पौत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम जयचन्द्र रखा गया। इन विजयों के द्वारा गोविन्दचन्द्र ने गहड़वाल साम्राज्य का चतुर्दिक विस्तार किया। विजेता होने के साथ-साथ गोविन्दचन्द्र एक महान कूटनीतिज्ञ भी थे। उनके चन्देलों, पालों, चालुक्यों तथा कश्मीर के शासक के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे। प्रबंध चिन्तामणि से ज्ञात होता है कि चालुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज ने अपना एक दूत कन्नौज दरबार में भेजा था। कल्हण के विवरण से कश्मीर तथा कन्नौज के मैत्रीपूर्ण संबंधों पर प्रकाश पड़ता है। गोविन्दचन्द्र के अनेक दानपत्र और सिक्के विभिन्न स्थानों पर मिलते हैं जो इस बात का प्रमाण हैं कि गोविन्दचन्द्र के समय में कन्नौज ने अपनी प्राचीन प्रतिष्ठा पुनः स्थापित कर ली थी। गोविन्दचन्द्र के लेखों में उसे 'विविध विद्याविचारवाचस्पति' कहा गया है जिससे पता चलता है कि वह स्वयं बहुत बड़ा विद्वान था। गोविन्दचन्द्र के शासन काल में अनेक लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान निवास करते थे, जिनमें उनका मंत्री 'लक्ष्मीधर' उसके द्वारा रचित 'कृत्य कल्पतरू' नामक ग्रन्थ अपना विशेष महत्व रखता है। गोविन्दचन्द्र की रानी कुमार देवी बौद्ध धर्मावलम्बी थी जिसने सारनाथ में एक बौद्ध विहार का निर्माण करवाया। गोविन्दचन्द्र एक विजेता, कुशल प्रशासक, विद्या और कला का संरक्षक महान शासक था, जिसने अपने वंश के यश को चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिया।

(क्रमशः)

शाखाओं का वर्चुअल स्नेहमिलन

कोरोना महामारी के चलती बनी परिस्थितियों में मैदानी शाखाओं का संचालन बंद है ऐसे समय में हमारा संघ से सम्पर्क कैसे बना रहे तथा आपदा को अवसर में कैसे बदला जा सकता है आदि विषयों को लेकर जोधपुर की सरदार छात्रावास शाखा तथा हनुवंत छात्रावास शाखा के स्वयंसेवकों का वर्चुअल कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें भोपालगढ़ प्रांत प्रमुख भरतपाल सिंह दासपा ने संघ से निरंतर सम्पर्क में रहने तथा आपदा के समय में व्यक्तित्व निर्माण से सम्बन्धी मार्गदर्शन किया

(पृष्ठ चार का शेष)

व्यवस्था...

इस प्रकार साझा स्वार्थों का यह गठजोड़ जो कार्यपालिका के सर्वोच्च राजनीतिक नेतृत्व से जो प्रारंभ होता है वह नीचे आते आते विधायक के राजनीतिक कार्यकर्ता और पटवारी कानिस्टेबल तक कायम होता है और इस प्रकार जिसे कानून बनाने के लिए चुना था, क्षेत्र की सार्वजनिक समस्याओं की बात प्रदेश की सबसे बड़ी पंचायत में प्रभावी ढंग से रखने के लिए चुना था, कार्यपालिका की मशीनरी पर विधायी नियंत्रण के लिए चुना था वह तो स्वयं कार्यपालिका बन जाता है और अपने व अपने लोगों के स्वार्थ सिद्धि में संलग्न हो जाता है। विगत वर्षों का एक उदाहरण तो ऐसा है कि खुलेआम अधिकारियों ने विधायकों के घर बैठकर उनकी चाह के अनुरूप शिक्षकों के स्थानांतरण किए थे। डिजायर प्रक्रिया पूर्ण रूप से व्यवस्थापिका को विकृत करने का मार्ग है और इसके कारण पूरी व्यवस्था विकृत होती जा रही है। निर्वाचित प्रतिनिधियों की बात करें तो सरपंच कार्यकारी पद होता है, प्रधान कार्यकारी पद होता है, जिला प्रमुख कार्यकारी पद होता है, नगर निकायों के अध्यक्ष कार्यकारी पद होते हैं लेकिन व्यवहार में हम देखें कि कितने सरपंच, प्रधान, जिला प्रमुख आदि विधायक की ईच्छा के विपरीत चलकर अपने दायित्वों का भली प्रकार निर्वहन कर पाते हैं? यदि वे ऐसा करना चाहें तो क्या विधायक जी की ईच्छा पर लगे हुए अधिकारी कर्मचारी उन्हें ऐसा करने देते हैं? कितने ही उदाहरण हम देखते हैं कि विधायक अपने विपरीत चलने वाले निर्वाचित सरपंचों को अधिकारियों के माध्यम से निलंबित करवा देते हैं, क्या यह उस जनमत का अपमान नहीं है जिसने उस सरपंच को निर्वाचित किया है? राज्य सरकारें अपने पक्ष के विधायकों को सत्ता सुख प्रदान करने के लिए लगभग हर जिला स्तरीय कार्यकारी समितियों के सदस्य बना देती है। होने को तो वे मात्र सदस्य होते हैं लेकिन क्या उस बैठक में मौजूद कोई भी अधिकारी, जो वास्तव में कार्यकारी है, उन विधायक महोदय से विपरीत राय रख सकता है जिनके प्रसाद पर्यंत तक वे उस क्षेत्र में पदस्थापित रह सकते हैं? इन सब प्रश्नों के उत्तर से स्पष्ट है कि व्यवस्थापिका के लिए चयनित विधायक कार्यपालिका की धूरी बन चुका है और पूरी व्यवस्था को विकृत करने को तत्पर है। यहां मजे की बात यह है कि कार्यपालिका को इससे तकलीफ नहीं है क्योंकि इसकी आड़ में वह अपने स्वार्थ पूरे करते है और इसी प्रकार साझा स्वार्थों के बल पर देश और प्रदेश के संसाधनों का शोषण हो रहा है। आज कार्यपालिका के राजनीतिक नेतृत्व में इतनी ईच्छा शक्ति शेष नहीं रही है कि वह विधायकों के इस हस्तक्षेप को रोक सके क्योंकि उनका खुद का आधार इतना कमजोर होता है कि वे अपनी कुर्सी बचाने को एक एक विधायक की मिजाज पुर्सी में लगे हुए हैं बल्कि वे तो आश्वासन देते हैं कि अवसर आने पर वे उनकी सभी प्रकार की पूर्ति कर देंगे। उस पूर्ति के लिए फिर वे विधायकों को खुली छूट देते हैं और फिर विधायक वह पूरा खर्चा निकालते हैं जो उन्होंने चुनावों के समय मतदाताओं की मिजाज पुर्सी में खर्च किया था। इस प्रकार यह कुचक्र चलता रहता है और हम इस कुचक्र के शिकार भी होते हैं तथा भागीदार भी। यदि भागीदारी घटा दें तो शिकार होने की संभावना भी कम होगी।

हम भूलते भी...

हमारा यह धैर्यपूर्वक उबाल ही हमें परिणाम तक पहुंचाएगा, याद रखना सिखायेगा और याद रखेंगे तो माफ नहीं करेंगे बल्कि अवसर की तलाश में रहेंगे और ज्योंही अवसर मिलेगा, परिणाम को भी इस प्रकार हासिल कर लेंगे जैसे यह कोई स्वाभाविक घटना हो। इसीलिए आवश्यक है कि बिना किसी उफान के प्रभाव में आये हम उबलना सीखें, अपने अंदर में समाज शरीर पर लगी चोट की धीमी आंच को सदैव सुलगाए रखें, चाहें वह आग विभीषण की परंपरा के कारण पनपी हो चाहे रावण की परंपरा के कारण। यदि यह आग जलती रही तो हम ना तो भूलेंगे और ना ही माफ करेंगे। पूज्य तनसिंह जी ने अपनी समाज चरित्र पुस्तक में जिस प्रतिहिंसा की भावना को प्रबल बनाने की सीख दी है, वह यही है। इसी मार्ग से हमारी यह भावना फलीभूत भी हो पायेगी।

महावीर चक्र ब्रिगेडियर रघुवीर सिंह राजावत का देहावसान

रघुवीर सिंह राजावत

1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध में अद्भुत वीरता एवं नेतृत्व क्षमता का परिचय देते हुए दुश्मन के 20 टैंकों को ध्वस्त करने वाले महावीर चक्र विजेता **रघुवीर सिंह राजावत** का 13 जून को देहावसान हो गया। ईश्वर उन्हें चिर शांति प्रदान करें

सोहनसिंह बोलागुड़ा का देहावसान

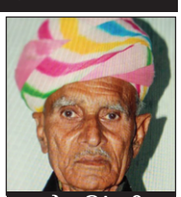
सोहनसिंह जी

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **सोहनसिंह जी बोलागुड़ा** का 28 मई को देहावसान हो गया। सोहन सिंह जी मई 1949 में संघ के पहली बार संपर्क में आये थे। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

रविंद्र सिंह उंचाईड़ा को मातृशोक

श्रीमती सुमन कंवर

संघ के नागौर संभाग के स्वयंसेवक रविन्द्र सिंह उंचाईड़ा की माताजी **श्रीमती सुमन कंवर** का 46 वर्ष की उम्र में 15 मई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को संबल प्रदान करें।

महावीर सिंह जी सरवड़ी को भ्रातृशोक

बजरंग सिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के बड़े भ्राता **बजरंग सिंह** जी का 66 वर्ष की उम्र में 6 जून को देहावसान हो गया। आप विगत लंबे समय से बीमार थे। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को संबल प्रदान करें।

चार महापुरुषों की वर्चुअल जयंती

गुजरात में ज्येष्ठ मास में महाराणा प्रताप की जयंती के साथ साथ वहां के चार महापुरुषों हरिसिंह जी गढुला, चन्द्र सिंह जी भाडवा, हरभम जी राज मोरबी और मनु भा चेर की भी जयंती मनाने की परंपरा रही है। वर्तमान में महामारी काल में भौतिक कार्यक्रम संभव न होने के कारण यह कार्यक्रम दो चरणों में रखा गया। प्रथम चरण में 12 जून को गुजरात के चार महापुरुषों के स्मरण में कार्यक्रम रखा गया एवं 13 जून को प्रताप जयंती मनाई गई। 12 जून को 11 बजे हुए कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीण सिंह सोलिया ने बताया कि हरिसिंह जी गढुला अपने अध्ययन काल से ही राष्ट्र भक्ति की तरफ आकर्षित हुए और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोगों के संपर्क में आकर भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य बने। राजकोट को अपना कार्यक्षेत्र बनाया एवं वहां इस विचारधारा के संवाहक बने। कालांतर में विधायक भी बने। इसी प्रकार चंद्र सिंह जी भाडवा की जूनागढ़ के भारत विलय में महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने कच्छ की भूमि को पाकिस्तान के कब्जे में जाने से

रोकने के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया। सौराष्ट्र में राजपूतों की कृषि भूमि को सुरक्षित करवाने हेतु आंदोलन किया व कानून में आवश्यक संशोधन करवाया। राजस्थान में हुए भुस्वामी आंदोलन के समय राजस्थान के राजपूतों के सहयोग के लिए गुजरात से आये प्रतिनिधि मंडल का भी आप दोनों ने नेतृत्व किया और आंदोलन के दौरान में श्री क्षत्रिय युवक संघ से परिचित हुए तथा प्रभावित हुए। उनके आग्रह पर ही तत्कालीन संघप्रमुख आयुवान सिंह जी व पूज्य तनसिंह जी गुजरात पधारे और कालांतर में 1959 में भावनगर में संघ का पहला शिविर लगा। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा ने हरभम जी राज मोरबी का स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने इंग्लैंड में पढाई की और अंग्रेज सरकार में बड़े पद पर चयनित हुए। इसी दौरान उन्होंने गुजरात में समाज के बच्चों की शिक्षा को लेकर चिंतन प्रारंभ किया और अपने व्यक्तिगत प्रयासों से धंधुका में अंग्रेज सरकार के गेस्ट हाउस को राजपूत छात्रावास के लिए प्राप्त किया। इस प्रकार 1909 में गुजरात का पहला राजपूत छात्रावास उनके प्रयासों से स्थापित हुआ। कालांतर में नौकरी छोड़कर इसी काम के लिए समर्पित हुए एवं समाज को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार किया। नौकरी में रहते हुए उन्होंने तत्कालीन रियासतों के रिकोर्ड्स को व्यवस्थित करने व अंग्रेज सरकार में उनकी पैरवी करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चौथे महापुरुष मनु भा चेर का स्मरण करते हुए अजीतसिंह जी ने कहा कि वे एक साधारण राजपूत के रूप में विशिष्ट व्यक्तित्व थे। वे गांधीजी के अनुयायी होते हुए भी सदैव अपने साथ शस्त्र रखा करते थे एवं गांधीजी उनके प्रति स्नेह व सम्मान रखते थे। उन्होंने गांव गांव घूमकर समाज के लोगों को स्वयं अपने हाथों से खेती करने के लिए प्रेरित किया क्योंकि उन्हें अंदेशा था कि आजादी के बाद भूमि उसको काश्त करने वालों की हो जाएगी। जिन लोगों ने उनकी बात मानी उनको कालांतर में इसका फायदा हुआ। उन्होंने चुड़ासमा राजपूत समाज का संगठन बना कर उसका संविधान बनाने का निश्चय किया। गांधीजी को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने उनकी सहायता के लिए वल्लभ भाई पटेल को विशेषज्ञों के साथ भेजा ताकि एक अच्छा संविधान बन सके। इस प्रकार ये चारों महापुरुष आजादी और उसके पूर्व के संक्रमण काल के ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने तत्कालीन समाज को भविष्य के लिए तैयार करने के लिए आवश्यक दिशा दी।

सन्यासियों और गृहस्थों के आदर्श जनरल हणुतसिंह

लेफ्टिनेंट जनरल हणुत सिंह सन्यासियों और गृहस्थों दोनों में बहुत ऊंचा और सम्माननीय स्थान रखते हैं। उनकी भक्ति उच्च स्तर की थी जिसमें सच्चरित्रता, त्याग, तपस्या, संयम व साधना की पावन धाराऐं प्रवाहित होती रहीं। वे भक्ति व शक्ति के जीते जागते पर्याय थे। बालोतरा के निकट जसोल के मूल निवासी एवं संत सैनिक के नाम से विभुषित लेफ्टिनेंट जनरल हणुत सिंह की स्मृति में संघ के बालोतरा संभाग द्वारा आयोजित वर्चुअल कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिणा ढाणा के महंत नारायण भारती जी ने उपरोक्त बात कही।

उन्होंने कहा कि राष्ट्र की नव पीढी के लिए जनरल साहब का जीवन प्रेरणा का अक्षय स्रोत है इसलिए मेरा सरकारों से निवेदन है कि हर स्तर के विद्यार्थियों को उनके जीवन से अवगत करवाया जाये। उन्होंने कहा कि वर्तमान में वे अकेले ऐसे उदाहरण हैं जिन्होंने सैनिक के रूप में अपने संपूर्ण दायित्वों को उत्कृष्टता पूर्वक निभाते हुए आध्यात्मिकता की ऊंचाइयों को भी छुआ। मेरा भारत सरकार से भी निवेदन है कि उन्हें भारत रत्न दिया जाना चाहिए। वे अकेले ऐसे युद्ध नायक हैं जिन्हें दुश्मन देश ने भी 'फक्र ए हिंद' की उपाधि से विभुषित किया। उन्होंने जिस प्रकार ध्यान की

अवस्था में देह का त्याग किया वह सन्यासियों के लिए भी दुर्लभ है। कार्यक्रम मे अपने विचार रखते हुए पूर्व प्रधान व साहित्यकार ठाकुर नाहरसिंह जसोल ने उनके जीवन के कई किस्सों को सुनाते हुए अपने सम्बोधन मे कहा कि लेफ्टिनेंट जनरल हणूतसिंह सिंह न सिर्फ मालाणी के बल्कि राष्ट्र की अनमोल विभुति थे। जिन्होंने कर्त्तव्य पालन व आध्यात्मिक उन्नति हेतु आजीवन अविवाहित रहते हुए देशसेवा में अपने आप को राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दिया। सेना में उन्हें एक कुशल सेनानायक, अदम्य साहसी व बहादुरी के लिए सदियों तक याद किया जायेगा। 1965 व 1971 की लडाईयों सहित अनेक सेना अभ्यासों मे लेफ्टिनेंट जनरल हणूतसिंह की भागीदारी न केवल रणकौशल के लिए बल्कि निर्णायक विजय के रुप मे गिनी जाती है। 1993 मे रिटायरमेंट के पश्चात आत्मकल्याण की आपकी यात्रा अनवरत चलती रही और अध्यात्म के उच्च शिखर तक पहुंचे और एक पहुंचे हुए संत के रुप मे अपनी पहचान स्थापित की। देहरादून स्थित लेफ्टिनेंट जनरल की समाधि के प्रबंधक व जनरल साहब की आध्यात्मिक विरासत के उतराधिकारी नृपेन्द्रकरण सिंह ने लेफ्टिनेंट जनरल हणूतसिंह के सैन्य व साधना के पक्षों पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका सैन्य जीवन जितनी वीरता, बहादुरी, अदम्य साहस व राष्ट्र भक्ति से ओतप्रोत था उतना ही सबल था उनकी कठिन साधना का मार्ग। अपनी रोजमर्रा की सैन्य ड्यूटी भलीभांति करते हुए भी प्रतिदिन 7-8 घंटे ध्यान, साधना व समाधिभाव में व्यतीत करते थे। वे बापजी बाला सतीजी के न सिर्फ अनन्य भक्त व उपासक थे बल्कि उन्हें माँ स्वरूपा मानते थे और प्रतिवर्ष लगभग दो महीने के लिए बापजी बालासती जी के आश्रम आकर उनके पावन सानिध्य मे अपनी तपस्या व साधना को पुष्ट व पल्लवित करते थे। नृपेन्द्रकरण सिंह ने अपने सम्बोधन मे बताया कि उनको अपने जीवन में तीन मुख्य चीजों से गहरा जुडाव रहा जिसके अन्तर्गत टैंक रेजिमेंट 17 पूना हॉर्स, देहरादून स्थित उनके आध्यात्मिक गुरु शिव बाला योगी व उनका आश्रम तथा बाला स्थित बापजी सतीजी व उनका आश्रम। ये तीन उनके जीवन के मुख्य आधार स्तंभ थे जो उनके जीवन में प्राणों की तरह समाये हुए थे। कार्यक्रम के प्रारंभ मे संघ के स्वयंसेवक चन्दनसिंह चान्देसरा ने उनकी जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लेफ्टिनेंट जनरल हणूतसिंह जसोल ने अपने के ध्येय को समझा, अपने जीवन के महत्व को समझा और उसी ध्येय प्राप्ति के मार्ग पर चलते हुए अपने सैन्य व साधना के मार्ग को अपनाया, जहाँ एक ओर राष्ट्र, कर्त्तव्य व कार्य को सर्वोपरि रखा तो दूसरी ओर आत्मकल्याण हेतु संयम, साधना, ब्रह्मचर्य व तपोबल को अंगीकार किया। 1971 के युद्ध मे उनके अतुलनीय योगदान व वीरता को देखते हुए भारत सरकार ने सैन्य क्षेत्र के श्रेष्ठ सम्मानों में से एक महावीर चक्र से उनको सम्मानित किया। वहीं दूसरी ओर इस लडाई मे अपनी रणकुशलता व बहादुरी का सांगोपांग परिचय पाकिस्तानी फौज व अवाम को भी कराया जिससे प्रभावित होकर पाकिस्तान ने भी उन्हें फक्र-ए-हिन्द की उपाधि देकर उनकी बहादुरी व साहस का सम्मान किया, जो अपने आप मे विश्व की अनूठी मिशाल है। कार्यक्रम का संचालन संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाडी ने किया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org